P: ISSN NO.: 2321-290X
E: ISSN NO.: 2349-980X
RNI : UPBIL/2013/55327
Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika
Vol-II * Issue-XI*July-2015

भारतीय सामाजिक व्यवस्था में धर्म निरपेक्ष शिक्षा का अस्तित्व

लोकेन्द्र बहादुर सिंह
प्रवक्ता,
बी0एड0 विभाग,
एम0एस0डी0 सिंह पी.जी. कालेज,
मोहम्मदाबाद, फर्रूखाबाद

सारांश

भारतीय समाज की आन्तरिक एकता को उभारकर दे"ा में प्रेम एवं सद्भावना बढ़ाई जानी चाहिए, इसमें f"ाक्षा बहुत महत्वपूर्ण योगदान दे सकती है। f"ाक्षा धर्म निरपेक्ष सन्दर्भ में दी जाये, जिसमें मूल, मानव, मूल्यों को पढ़ाया जाये, सभी धर्मों के अच्छे तत्वों का इसमें समावे"ा हो, अलग से कोई भी धार्मिक f"ाक्षा न प्रदान की जाय, यदि दी जाये तो केवल व्यक्तिगत हो उसका प्रभाव समाज पर किसी भी प्रकार से न पड़े अन्यथा समाज पर विपरीत प्रभाव पड़ेगा। किसी हद तक आज हमारे समाज पर उसका असर दिखाई दे रहा है। धार्मिक उन्माद रहित धर्म, निरपेक्ष f"ाक्षा की आज महत्वपूर्ण आव"यकता है, अन्यथा दे"ा में विघटनकारी शक्तियों को बढ़ावा मिलेगा जो राष्ट्र के विकास में एक बाधक तत्व है।

मुख्य शब्द : धर्म निरपेक्षता, रूढ़िवाद, कट्टरता, अलौकिक, प्रवृत्ति।

प्रस्तावना

भारतीय समाज में अत्यधिक सामाजिक भिन्नता है जिसका वर्णन सरलता से नही हो सकता है भारतीय समाज की जटिलता इतनी कठिन है कि उसकी जितनी व्याख्या करगे उतना ही उलझेगे, भारतीय समाज जिसमें व्यक्ति कुछ मान्यताओं नियमों, परम्पराओं एवं आद"ार्ों से बद्ध है। ऐसे समूह के सदस्यों के सम्मुख कुछ समान उद्दे"य होते है किन्तु यदि गहराई में उतरकर समाज की पकृति का अध्ययन किया जाये तो इसमें दोष दिखाई पड़ते है। यह सत्य है कि भारतीय समाज विभिन्न जातियों, धर्म एवं अध्यात्मिक विचार धाराओं का संकलन है, यह भी सत्य है कि इस समाज की एक अनोखी वि"ोषता विभिन्न प्रतीत होती है किन्तु इस समाज की मुख्य वि"ोषता विभिन्नता नहीं है। यहाँ विभिन्नता सतही है, किन्तु एकता आन्तरिक।

भारतीय समाज के अनेक संघर्ष द्वन्द एवं तनाव है, किन्तु फिर भी उसमें एकता है गाँधी जी के पास कोई राजनीतिक शक्ति नहीं थी फिर भी वह राष्ट्रीय एकता स्थापित कर सके! आखिर क्यों? इसलिए कि उन्होंने छिपी हई दे"ा की गुप्त एकता की धारा को पहचान लिया उस धारा के साथ बहते हुये उसे शक्ति"ाली बनाते गये स्वतन्त्रता की लड़ाई में सारा दे"ा उनके साथ उठ खड़ा हुआ, हिन्दू, मसलमान, सिक्ख, ईसाइ, बंगाली, मद्रासी, पंजाबी इत्यादि सबने उनका साथ दिया यह ध्यान देने की बात है कि गाँधो जी दे"ा की एकता के सूत्र में बांधने में कभी सफल न होते यदि दे"ा में एकता की आन्तरिक शक्ति निहित नहीं होती।

लेकिन हमें भारतीय इतिहास में एकता और विभिन्नता का विरोधाभास सदैव दिखाई पड़ता है। हुमायूँ, कबीर के शब्दों में ''सम्पूर्ण भारतोय इतिहास में एक ओर तो हम धर्म और संस्कृति के आधार पर एकता की प्रवृत्ति पाते है जबकि दूसरी ओर भाषा, रीति–रिवाज एवं आर्थिक और राजनीतिक कारणों पर विघटन की''

सामाजिक समस्यायें

आज हम इक्कीसवी सदी में जी रहे है हमारे पास आधुनिक तकनीक है, कम्प्यूटर है, सटेलाईट है, मंगल गृह पर बस्तियाँ बसाने की बात सोचते हैं, संचार के साधन है, यातायात के उत्तम साधन हैं, लेकिन फिर भी हम अभी परिपक्व नहीं है जातिवाद, क्षेत्रवाद, भाषावाद, सम्प्रदायवाद, धार्मिक कट्टरता आज समाज में सब ओर दिखाई पड़ रही है। आज हमारे पड़ोसी दे"ा खतरा बने हुये है। चीन तथा पाकिस्तान हमें घेरने में लगा हुआ है। आन्तरिक कट्टरपंथी दे"ा को खोखला बना रहे है। इस समय फिर हमें आजादी की लड़ाई के समय वाली एकता की आव"यकता है। इन सब बातों की समझ जनमानस में f"ाक्षा द्वारा ही पहुँचायी जा सकती है। आज हमे धर्मनिरपेक्ष f"ाक्षा की आव"यकता है।

धर्म और धर्म निरपेक्ष ि"ाक्षा को जानने से पहले हमे इसके विषय में जानना होगा कि धर्म क्या है किलपैट्रिक महोदय के अनुसार ''धर्म एक सांस्कृतिक प्रतिकृति है जो अलौकिक अथवा असाधारण से उस प्रकार से सम्बन्ध रखता है जैसे कि उन वि"िाष्ट व्यक्तियों द्वारा समझे जाते हो जो उसमें आलिप्त है।''

भारत एक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र है भारतीय संविधान की धारा 19 में यह बात स्पष्ट कर दी गयी है कि ''सभी व्यक्ति अपनी इच्छानुसार किसी भी धर्म का अनुसरण कर सकते है यहाँ के नागरिकों को इस बात की स्वतन्त्रता प्रदान की गयी है कि वे किसी धर्म को मानने तथा उसके अनुसार आचरण करने को स्वतन्त्र है।'' लेकिन ''किसी भी प्रकार की धार्मिक ि"ाक्षा ऐसे विद्यालयों में जो कि पूर्णतः सरकारी सहायता पर हैं, नही दी जायेगी''।

जब हम कहते है कि ि"ाक्षा अपनी प्रकृति में धर्म निरपेक्ष होनी चाहिए तो हम यह कहना चाहते है कि तार्किक रूप से स्वीकृत तथा वैज्ञानिक रूप से सिद्ध, सत्यताओं का ि"ाक्षण दिया जाये और ि"ाक्षा अपने को अलौकिक, भ्रान्तिपूर्ण तथा रहस्यमय तथ्यों से विलग रखे। इस प्रकार धर्म निरपेक्षता एक द"ार्न है ब्रूबेचर के अनसार'' इस द"ार्न का कोई धार्मिक दष्टिकोण नहीं है, जबकि इसकी नैतिक ि"ाक्षा की एक थ्यौरी है।'' धर्म निरपेक्षता मानव अनुभव पर बल देती है। यह वैज्ञानिक सिद्धान्तों में आस्था को प्रोत्साहित करती है।

निष्कर्ष

परन्तु भारतीय समाज में धर्म निरपेक्षता का रूप विकृत होता जा रहा है। कहीं एक धर्म को साथ लेकर चलते हैं और उसकी आस्था का आदर करते हैं और उसी को ही धर्म निरपेक्षता कहते है। अन्य धर्मों से राजनीतिक कारणों से विद्वेष रखते है। धर्मनिरपेक्षता धारणा में विज्ञान धर्म है, वैज्ञानिक इसके पुजारी है। धर्म निरपेक्षता धर्म के दष्टिकोण को ठुकराने के बावजूद नैतिक विकास की बहुत कदर करती है। आज हमे नैकित विकास को ही आत्मसात करना है। ब्रूबेचर ने धर्म निरपेक्ष की इस धारणा को इस प्रकार व्यक्त करके स्पष्ट किया है कि

''नैतिक आद"ार्ा साधारण रूप में आचरण प्रतिमान हैं जिन्हें मानव से अनेक शताब्दियों के दूसरे मानवों के साथ सम्बन्धों के उपरान्त मानव प्रसन्नता तथा कल्याण के लिए सबसे अधिक उत्पादक पाया है।''

अतएव धर्म निरपेक्ष ि"ाक्षा द्वारा यह नैतिक आद"ार्ा जो मानव कल्याण के लिए सबसे अधिक उपयोगी पाये गये हैं, सिखाना है।

यह बहुत ही चिन्ता का विषय है कि संविधान में दिये हुये धर्म निरपेक्ष आद"ार्ा को हमारे कानून के निर्माताओं के नकारात्मक धारणा के रूप मे हमारी ि"ाक्षा प्रणाली में स्थान दिया है। यह बात इस निर्दे"ा से स्पष्ट है कि ''सरकारी विद्यालय में किसी भी धर्म की ि"ाक्षा न दी जाये।''

यह नकारात्मक इसलिए अपने आ"ाय में है कि यह नहीं कहता कि इसे पढ़ाओं। जबकि धार्मिक ि"ाक्षा का बहिष्कार किया गया। कहीं पर इस बात का बल नहीं दिया गया कि नैतिक ि"ाक्षा दी जानी चाहिए। इसी प्रकार अल्पसंख्यक जातियों द्वारा संचालित संस्थाओं के कार्यक्रम में कोई हस्तक्षेप नहों करो। यह वैधानिक निर्दे"ा है। यह भी नकारात्मक है, सकारात्मक निर्दे"ा को यह होता कि सब संस्थाओं को मूल मानव मूल्यों को, विद्यार्थिया को सिखाने की, पूर्ण स्वतन्त्रता है।

सुझाव

हमें यह देखना चाहिए कि जो समाज हम बनाना चाहते हैं उसके आद"ार्ो की ि"ाक्षा हम विद्यालयों में देते हैं, इन्हीं विद्यालयों से छात्र समाज में आते हैं, अन्तर यह है कि सरकारी विद्यालयों के छात्र तथा अल्प जातियों द्वारा संचालित संस्थाओं के छात्रों के मूल्यों में बड़ा अन्तर होता है। जब यह विपरीत विचारधाराओं के व्यक्ति समाज में आते हैं तब टकराव की स्थिति बनती है। क्योंकि धार्मिक संस्थाओं के छात्र अपने साथ धार्मिक कट्टरता भी समाज में लाते है।

धर्म निरपेक्ष की वास्तविक धारणा वैज्ञानिक एवं तार्किक चिन्तन के चहुँओर फैली हुई है किन्तु वर्तमान स्थिति में यह रूढ़िवादिता को पोषित करती हुई प्रतीत होती है, विद्यालयों से अपेक्षा की जाती है कि वह परम्पराओं के विरूद्ध कोई कदम नहीं उठायेंगे और अपने ि"ाक्षण में धार्मिक कट्टरता के उन्मूलन की दि"ाा में कोई प्रयास नहों करेंगे। आज धर्म निरपेक्षता के नाम पर धार्मिक कट्टरता सम्बन्धी दोषों को दूर करने के पयासों में रूकावट डाली जाती है। यह धर्म निरपेक्षता को गलत अर्थ देने के कारण हो रहा है। हमें ि"ाक्षा देते समय धर्म निरपेक्षता के सही अर्थों को समझना चाहिए, धर्म निरपक्ष वह द"ार्न है जो तर्क पर केन्द्रित है, जो रीतियॉ, परम्पराय, वि"वास, धारणाय, अन्धवि"वास को बढ़ावा देते है उनका उन्मूलन ही धर्म निरपेक्ष ि"ाक्षा का ध्येय है अन्यथा धर्म निरपेक्ष ि"ाक्षा का अस्तित्व खतरे में पड़ेगा और आगे आने वाले समय में टकराव की स्थिति और बढ़ेगी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. किलपेट्रिक
2. कान्स्टीट्यू"ान ऑफ इण्डिया, आर्टिकिल 19
3. ''दि इसेन्ि"ायल यूनिटी ऑफ रिलीजन'' डॉ भगवान दास
4. ''मॉर्डन फिलोसफी ऑफ एजूके"ान पेज–308''
5. महात्मा गॉधी
6. डॉ0 एस0एस0 माथुर